U.G.C. Serial No. 02, Journal No. 49335 ISSN - 0974-1526

SAMSKRTI SANDHĀNA

Volume - XXX **No. 1** **(January-June) 2017**

REFERRED JOURNAL

Editor

Dr. Jhinkoo Yadav

JOURNAL OF THE RESEARCH INSTITUTE OF HUMAN CULTURE, VARANASI

२२. भारतीय कलाकृतियों की रचना प्रक्रिया में सौन्दर्य बोध की अवधारणा	राजकुमार गुप्त	१२९-१३४
२४. राष्ट्रपति भवन : ब्रिटिश कालीन स्थापत्य कला का अप्रतिम प्रतिमान	रीतू तिवारी	१३५-१४०
२५. आधुनिक विज्ञान में प्रमाण	अरविन्द कुमार राय	१४१-१५५
२६. काश्मीर शैव दर्शन में प्रमाण	सीमा यादव, रामनाथ यादव	१५६-१६१
२७. इलाहाबाद संग्रहालय का अद्वितीय प्रतिमाशिल्प २३ यक्षिणियों सहित अम्बिका	मीनू अग्रवाल	१६२-१६९
२८. सैंधव-सरस्वती वासियों का कला एवं सौन्दर्य बोध	निधि पाण्डेय	१७०-१७५
२९. वैदिक काल से कुषाण काल तक की मूर्तिकला में सौंदर्यबोध	आर०पी० पाण्डेय प्रकाश यादव	१७६-१८१
३०. बौद्ध मूर्तियों में सौन्दर्य बोध : एक अध्ययन	आर०पी० पाण्डेय प्रमोद कुमार गुप्ता	१८२-१८५
३१. 'स्तम्भ-योशित' एवं 'बहुरूपक शालभञ्जिका'	निर्मला गुप्ता	१८६-१९३
३२. मध्यकालीन कला में स्त्री केश सौन्दर्य	आभा मिश्रा पाठक	१९४-२००
३३. उत्तराखण्ड की दिवारा (देवयात्रा) परम्परा में मुखौटा: कलात्मक सौन्दर्य के विशेष सन्दर्भ में	घनसिंह बिष्ट अजय जोशी	२०१-२०८
३४. हिमालयी सौंदर्य पर कलात्मक स्पर्श : कलाविद् रणबीर सिंह बिष्ट और हरीश श्रीवास्तव के विशेष परिप्रेक्ष्य में	बबीता बिष्ट	२०९-२१४
३५. शिल्पग्रन्थों में वर्णित उमा-महेश्वर प्रतिमाओं का सौन्दर्य बोध	सुरेन्द्र यादव शैला यादव	२१५-२२४
३६. पटोला साड़ी एवं इसके अलंकरण : सौन्दर्य बोध के विशेष परिप्रेक्ष्य में	जसमिन्दर कौर	२२५-२३०
३७. Aesthetic Perception as Reflected in Feminine Beauty of Early Buddhist Sculptural Art of Central India	Vinay Kumar	231-238
३८. Use of Flora-Fauna as symbols in Buddhist Art	Anukriti Bisht Aekta Bisht	239-244
३९. Aesthetics in Rock Art (Special reference with Bhimbetka)	R.P. Pandey	245-251
४०. Aesthetics Statues of Madhya Pradesh	R.P. Pandey Priyanka Yadav	252-258
४१. Emotions: An Indian perspective	Jai Prakash	259-266

शिल्पग्रन्थों में वर्णित उमा-महेश्वर प्रतिमाओं का सौन्दर्य बोध

सुरेन्द्र यादव* शैला यादव**

किसी सुन्दर वस्तु को देखकर या सुनकर हमारे मन में जो आनंददायिनी अलौकिक अनुभूति होती है, वही सौन्दर्य है। उसी सौन्दर्य को कला, संस्कृति और प्रकृति के विविध प्रतिरूपों के रूप में देखा जा सकता है। मूर्तिकला जीवन में सौन्दर्य के साथ-साथ पुरुषार्थ की प्राप्ति का भी माध्यम है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में कला को धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष के साधन के रूप में वर्णित किया गया है।[1] भारतीय कला, दर्शन एवं साहित्य में सौन्दर्य की विवेचना प्राचीन काल से ही चली आ रही है। इस सौन्दर्य को विविध नामों यथा रमणीयता, चारुत्व, विच्छिति, शोभा, कान्ति, चमत्कार, वैचित्र्य एवं वक्रता आदि नामों से व्यपदिष्ट किया गया है। सौन्दर्य शब्द सुन्दर + ष्यञ् से बना है, जिसका अर्थ है मनोहरता। सुन्दर शब्द की व्युत्पत्ति कई प्रकार से की गई है, जिसकी एक व्युत्पत्ति है- सु + उन्द + अरन् । इसका शाब्दिक अर्थ है, नयनों को सिक्त कर देने वाला अर्थात् सुख देने वाला। कला में सौन्दर्य की धारणा किसी न किसी रूप में सम्बद्ध रहती है। सौन्दर्य भावना से हीन कोई भी कला ग्राह्य नहीं हो सकती है। कला में सौन्दर्य की अनुभूति न केवल इन्द्रियों को अपितु मन और बुद्धि को भी आकर्षित करती है। इन कलाकृतियों में सभी गुणों का समन्वय होता है, जो मानव को आकर्षित, प्रभावित एवं आनन्दित करता है। कुछ कलाकृतियों का सौन्दर्य आध्यात्मिक आनन्द प्रदान करता है। भारतीय कला मर्मज्ञों ने सत्यं, शिवं एवं सुन्दरं त्रिगुणात्मक तत्वों में सौन्दर्य को इतना महत्व दिया है कि कोई भी कला पूर्ण नहीं मानी जाती यदि उसमें इन त्रिगुणात्मक तत्वों का आभास न हो। इन्हीं तत्वों के आधार पर कला ने आध्यात्मिकता एवं अमरत्व को प्राप्त किया।

भारतीय कला में सौन्दर्य तत्व का प्रत्यक्ष प्रमाण हमें शैव सम्प्रदाय से संबंधित प्रतिमाओं में देखने को मिलता है। शिव से संबंधित प्रतिमाओं को उनके कलागत, रूपगत एवं भावगत दृष्टि से दो रूपों में विभक्त किया गया है, जो रौद्र एवं सौम्य रूप से संबंधित हैं। सौम्य रूप में शिव के शान्त, अनुग्रह तथा कल्याणकारक भाव प्रदर्शित है। इस अवस्था में शान्तभाव, इच्छित वस्तु का प्रदान, पार्वती के साथ संभाषण, योग तथा ज्ञान की शिक्षा आदि सद्भावना के साथ अंकन किया गया है। सौम्य प्रतिमाएं स्थानक तथा आसनस्थ दोनों प्रकार की मिलती हैं।

* सहायक प्राध्यापक, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, डॉ० हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय सागर, म०प्र०।

** शोधछात्रा, संस्कृत विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

सौम्य प्रतिमाओं में सोम-स्कन्द, आलिंगन चन्द्रशेखर, सदाशिव, नीलकंठ, महेश्वर, गंगाधर एवं उमा-महेश्वर प्रतिमाएं महत्त्वपूर्ण हैं। भारतीय कला, धर्म, दर्शन एवं संस्कृति के सौन्दर्य बोध का समग्रतापूर्वक समागम उमा-महेश्वर प्रतिमाओं में दिखलायी देता है।

प्रस्तुत शोध पत्र शिल्पशास्त्रीय ग्रन्थों में वर्णित उमा-महेश्वर प्रतिमाओं के सौन्दर्य बोध के विविध पक्षों के अध्ययन पर आधारित है। उमा-महेश्वर प्रतिमाओं के प्रतिमाशास्त्रीय लक्षण का वर्णन विविध शिल्पशास्त्रीय ग्रन्थों में मिलता है, जिनमें विष्णुधर्मोत्तर पुराण, अपराजितपृच्छा, अंशुमद्भेदागम, रुपमण्डन, देवतामूर्तिप्रकरण एवं मत्स्यपुराण आदि प्रमुख हैं। इन शिल्पशास्त्रीय ग्रन्थों के आधार पर उमा-महेश्वर प्रतिमाओं के शारीरिक, अलंकारिक, आध्यात्मिक एवं सांसारिक सौन्दर्य के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।

भारतीय शिल्प में युग्म-मूर्ति स्वरूप उमा-महेश्वर को आलिंगन-मुद्रा में दिखाये जाने का सर्वप्रथम प्रमाण कुषाणकाल से प्राप्त होता है।[२] गुप्तकाल तथा उसके बाद भारत में लगभग सभी कला केन्द्रों पर उमा-महेश्वर का निरूपण लोकप्रिय रहा। उमा-महेश युग्म-मूर्ति का शिल्पशास्त्रीय निरूपण विभिन्न शिल्प ग्रन्थों में हुआ है। जिनमें उमा-महेश्वर को विविध नामों यथा आलिंगन चन्द्रशेखर, हर-गौरी, त्रिपुरसुन्दरी एवं शिव-पार्वती नामों से उल्लेखित किया गया है। शिल्पग्रन्थों में उमा-महेश्वर की प्रतिमाओं का तालमान, उनके अंग-प्रत्यंगों के गढ़न में उनके विनियोग, रूप विधान एवं देहविन्यास के अलंकरण के लिये विविध प्रकार के आभूषणों का वर्णन किया गया है। इसके साथ ही इन ग्रन्थों में प्रतिमा विधान के अनुरूप ही उमा-महेश्वर के आयुधों, उपकरण (प्रासाधनिक वस्तुओं), वाहनों, गणों एवं पुत्रों आदि का भी उल्लेख मिलता है। निम्नलिखित शिल्पग्रन्थों में उमा-महेश्वर की प्रतिमाओं का वर्णन मिलता है।

विष्णुधर्मोत्तर पुराण : विष्णुधर्मोत्तर पुराण में उमा-महेश्वर के प्रतिमाशास्त्रीय लक्षणों का उल्लेख किया गया है, जिसके अनुसार उमा एवं शिव को एक ही पीठिका पर आलिंगन करते हुये प्रदर्शित करने का विधान वर्णित है। जट-जूटधारी शिव के दाहिने हाथ में नीलोत्पल तथा बायाँ हाथ उमा के कन्धे पर दिखाना चाहिये। उमा का दाहिना हाथ शिव के कन्धे पर और हाथ में कमल पुष्प प्रदर्शित किया जाना चाहिये।[३] कभी -कभी शिव के दाहिनें हाथ में त्रिशूल के अंकन का भी विधान है। पीठिका के निचले हिस्से पर सिंह एवं नन्दी का अंकन क्रमशः उमा एवं शिव के वाहन के रूप में दर्शित है।

युग्मं स्त्रीपुरुषं कार्यमुमेशौ दिव्यरूपिणौ। अष्टवक्त्रं तु देवेशं जटाचन्द्रार्धभूषितम्।।
द्विपाणिं द्विभुजां देवीं सुमध्यां सुपयोधराम्। वामपाणिं तु देवस्य देवस्कन्धे नियोजयेत्।।
दक्षिणं तु करं शम्भोरुत्पलेन विभूषितम्। देव्यास्तु दक्षिणं पाणिं स्कन्धे देवस्य कल्पयेत्।।
विष्णुधर्मोत्तरपुराण, १०५, ८-१०

अपराजितपृच्छाः अपराजितपृच्छा में उमा-महेश्वर को समीपस्थ आसीन बैठे हुये दिखलाया गया है। महेश्वर के दाहिने हाथ में बीजपूरक एवं त्रिशूल है। बायाँ हाथ उमा की पीठ के पीछे से निकला हुआ है, और उनमें नाग धारण किये हुए हैं। उमा का दाहिना हाथ देव के

स्कन्ध को स्पर्श कर रहा है, उसमें दर्पण धारण की हुई हैं। देवमूर्ति के नीचे नन्दी का अंकन होना चाहिये। प्रतिमा के एक ओर कार्तिकेय तथा गणेश का अंकन तथा दूसरी ओर क्षीणकाय भृंगी नृत्य करता दर्शाने का निर्देश है।[४] देवतामूर्तिप्रकरण में भी उमा–महेश्वर के लगभग इसी प्रकार के प्रतिमाशास्त्रीय लक्षणों का अंकन मिलता है।[५]

अंशुमद्भेदागमः अंशुमद्भेदागम के अनुसार शिव की जटा में चन्द्रमा की आकृति के कारण उन्हें चन्द्रशेखर नाम दिया गया। चन्द्रशेखर प्रतिमा के पीछे की कथा यह है कि नग्न शिव को देखकर ऋषि–पत्नियाँ मोहित हो अपना सतीत्व खो बैठीं। ऋषि–वृन्द क्रुद्ध होकर आभिचारिक मन्त्रेष्टि की जिससें यज्ञीय–भूमि से सर्प, कृष्ण मृग, अपस्मार–पुरुष, परशु, वृषभ, शादूर्ल आदि का जन्म हुआ। इन्हीं से ऋषियों ने शिव को मारने की सोची। शिव ने इनमें से परशु, कृष्ण मृग तथा सर्पों को अपने लीला लांछन बनाये, सिंह एवं शार्दूल को मारकर अपना परिधान बनाया। अपस्मार को पैर से रौंदकर सदा के लिये अपनी पीठिका बनायी। कपाल और चन्द्र को अपनी जटा–मुकुट में शोभार्थ स्थान दिया। इस प्रतिमा में उमा सहित चन्द्रशेखर एवं आलिंगन चन्द्रशेखर का अंकन है।[६] अंशुमद्भेदागम में चन्द्रशेखर अपने बगल में बैठी उमा का आलिंगन करते हुए दिखाये जाते हैं। उमा दाहिने हाथ में कमल तथा बायें हाथ से महेश्वर के कटि का आलिंगन करती हैं।[७]

केवलं त्वेवमाख्यातं वामे गौरीसमायुतम्।
तद्गौरीसहितं ख्यातं भिन्नपीठैकमेव वा।।

रूपमण्डन : रूपमण्डन के अनुसार 'उमा–महेश' की प्रतिमा मनोहर लीलाओं से युक्त होना चाहिए। शिव को जटामुकुट विविध प्रकार के आभूषणों से विभूषित, त्रि–नेत्रयुक्त बनाना चाहिए। शिव के चतुर्भुजी हाथों में दाहिनें हाथ में मातुलिंग और त्रिशूल व बायें हाथ से उमा का आलिंगन करते हुए, दूसरे हाथ में नागेन्द्र (सर्प) को प्रदर्शित करने तथा वाम भाग में उमा की मूर्ति बनाने का उल्लेख हुआ है। उमा का एक हाथ शिव के बायें कन्धे पर और दूसरे में दर्पण हो, सिर के आभूषणों तथा अलकावलियों द्वारा मुख का भाग ललित हो, बालियों से कान तथा तिलक से ललाट शोभायमान हो रहा हो। उमा को हार और केयूर से सुसज्जित कर शिव के मुख का अवलोकन करते हुए बनाने का विधान बताया गया है।[८] इसी ग्रन्थ में उमा– महेश्वर प्रतिमा के साथ वृषभ, स्कन्द, नन्दी तथा नृत्य करते हुये भृंगी ऋषि को भी प्रदर्शित करने का उल्लेख है।

उमामहेश्वरं वक्ष्ये उमया सह शंकरः। मातुलिंगं त्रिशूलश्च धरते दक्षिणे करे।।
आलिंगितो वामहस्ते नागेन्द्रो द्वितीये करे। हरस्कन्द उमाहस्ते दर्पणो द्वितीये करे।।
अधस्तात् वृषभं कुर्यात् कुमारं च गणेष्वरम्। भगिंरिटिं तथा कुर्यान्निर्मासं नृत्यसंस्थितम्।।
रुपमण्डन, ४–२७, २८, २९

पुराणों में उमा–महेश्वर : विभिन्न पुराणों में उमा–महेश्वर प्रतिमाओं के अंकन का उल्लेख मिलता है। मत्स्यपुराण के अनुसार चन्द्रविभूषित जटाभार से युक्त त्रिनेत्र शिव द्विभुज या चतुर्भुज होंगे। शिव के दाहिनें हाथों में पद्म तथा शूल (त्रिशूल) होगा और बायाँ एक हाथ उमा

का आलिंगन करता उनके वाम पयोधर पर होगा तथा दूसरा उनके स्कन्ध पर स्थित होगा। शिव विविध प्रकार के रत्नों से विभूषित, व्याघ्रचर्म से युक्त, सुन्दर केशों से सुसज्जित, मुखमण्डल को अर्धचन्द्रमा से विभूषित तथा उचित रूप से प्रतिष्ठित करना चाहिये. देवी उमा भी विविध आभूषणों से सज्जित मनोज्ञदर्शना होंगी। उनके सिर के आभूषणों तथा अलकावलियों द्वारा मुखभाग ललित हो और बालियों से कान तथा तिलक से ललाट शोभायमान हो रहा हो। कहीं-कहीं कानों को अलंकृत करने के लिए मणिनिर्मित कुण्डल पहनाये जाते हैं। नितम्बभाग पर तीन लड़ियों वाला कटिसूत्र लटकता रहना चाहिये। उमा को हार या केयूर से सुसज्जित कर शिव के मुख का अवलोकन करने वाली बनावें। उमा के करों में दर्पण और शिव के आलिंगन से युक्त होंगी। उमा के दोनों ओर जया- विजया, कार्तिकेय और गणेश तथा तोरणद्वार पर गुह्यक गणों को प्रदर्शित करना चाहिये। उसी प्रकार वहाँ मालाधारी विद्याधर और वीणा से सुशोभित अप्सराओं को बनाना चाहिये। समृद्धिकामी को उमापति शिव की प्रतिमा इस प्रकार बनवानी चाहिये।[९]

श्रीमद्‌भागवतपुराण में उल्लेखित है कि शिव पार्वती के साथ कैलाश पर्वत पर विराजमान रहते हैं। सिद्ध, चारण, ऋषि -मुनियों ने जब शिव को देखा उस समय देवी पार्वती भी उनके समीप थीं। शिव जी उन्हें अपने अंक (गोद) में बैठाए हुए थे और अपना एक हाथ उनकी पीठ पर रखे हुए थे।[१०]

गिरिशं ददृशे गच्छन् परीतं सिद्धचारणैः।

आलिंग यागींकृतां देवीं बाहुना मुनि संसदि।। श्रीमद्‌भागवत पुराण ६/१७/५

लिंगपुराण में उमा-महेश्वर प्रतिमा के निर्माण विधि एवं माहात्म्य चर्चा का उल्लेख किया गया है। यदि कोई भी व्यक्ति उमा के साथ बैल पर सवार तथा सिर पर चन्द्रमा को धारण किये हुए शिव की मूर्ति बनाकर उनकी उपासना करता है तो वह शिव के दैवीय लोक में प्रवेश पाता है।[११]

वामनपुराण में उमा-महेश्वर प्रतिमा के सम्बन्ध में बतलाया गया है कि विवाहोपरान्त भगवान शिव कैलाश पर्वत पर व्याघ्रचर्म धारण किये हुए विविध आभूषणों से सज्जित देवी पार्वती के साथ अवस्थित हैं। उमा-महेश्वर के एक तरफ भगवान जनार्दन लक्ष्मी के साथ अपने वाहन गरुड़ तथा दूसरी तरफ हंसारूढ़ ब्रह्मा हैं। इसके साथ ही एकादश रुद्र एवं अन्य देवतागण भी वहाँ उपस्थित हैं।[१२]

शिवपुराण में उमा-महेश्वर मूर्ति का विवेचन प्राप्त होता है, जिसके अनुसार अविनाशी देव को सविधि देवीगण आदि के साथ आह्वाहन करके उनमें प्रभु की महेश्वरी मूर्ति की कल्पना करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त यह भी उल्लिखित है कि चार मुख, चार भुजा, आभूषणों से भूषित, हँसते हुए मुख से युक्त, मृग-चर्म धारण किये हुए अथवा अष्ट मुद्रा मूर्ति बनाकर उनकी उपासना करनी चाहिए। उसी ग्रन्थ में आगे यह भी निर्दिष्ट है कि दाहिने हाथ में त्रिशूल, परशु, खड्ग तथा वज्र और बायें हाथ में पाश, अंकुश, खट्वांग को धारण किये हुए, सूर्य के समान

बाल, प्रत्येक मुख के तीन आँख, पूर्व मुख सौम्य तथा समान प्रभाव वाला प्रतिमांकित करना चाहिए। इसके अतिरिक्त उत्तर का भाग मूँगे के समान नीली अलकों से विभूषित, दक्षिण की तरफ का नीले मेघ के समान घोर दर्शन, पश्चिम का पूर्ण चन्द्रमा के समान सौम्य, चन्द्रकला को धारण करने वाला, उनके अंक में आरूढ़ माहेश्वरी पराशक्ति की मूर्ति भी होनी चाहिए। इस मूर्ति के माहात्म्य के विषय में यह उल्लिखित है कि इस क्रम से मूर्ति निर्माण करने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है।[१३]

उमा-महेश्वर प्रतिमा में उमा को सदैव बायीं ओर स्थान दिया गया है। सामान्यतया शिव ललितासन मुद्रा में तथा उमा उनकी वाम जंघा पर पालथी मारे बैठी दिखलायी देती है। शिव सदैव जटामुकुट या जटाभार, एकावली एवं अधोवस्त्र से तथा उमा स्त्रियोचित आभूषणों से सुशोभित हैं। उमा शिव की ओर देखते हुए प्रदर्शित होती हैं। कालिदास ने कुमारसंभव में उमामहेश्वर का वर्णन करते हुए लिखा है कि पार्वती के मुँह की तरफ शिव इस प्रकार देखते हैं कि मानो वे मुख से नहीं नेत्रों से उमा का पान कर रहे हैं।[१४]

तस्याः स कठापिहितास्तनाग्रन्यधत्त मुक्ताफलाहार वल्लीम।

या प्राप मेरुद्विर्तस्य मूर्ध्नि स्थितस्य गागौध युगस्य लक्ष्मीम्।।

घूर्णमाननयनं स्खलत्कथं स्वेदविन्दुमदकारण स्मितमं।

आननेनतु तादीश्वर चक्षुषा चिरमुखमुखपपौ।। कुमारसंभव, ८ - ८

उमा-महेश्वर प्रतिमाओं का प्रतिमाशास्त्रीय सौन्दर्यः प्रतिमाशास्त्रीय दृष्टि से उमा-महेश्वर के अंकन में संतुलन का विशेष महत्व है। वह देखने में स्वाभाविक तथा यथार्थमय दिखाई देती हैं। इन प्रतिमाओं को साधारण व भीड़-भाड़ दोनों प्रकार से बनाया गया है व इनमें पूरी तरह से संतुलन भी रखा गया है। साधारण प्रतिमा में केवल उमा-महेश्वर एवं उनके वाहन का अंकन है, जबकि दूसरे प्रकार में उमा-महेश्वर अपने पुत्रों, गणों, अनुचरों एवं वाहनों के साथ दिखते हैं। उमा-महेश्वर प्रतिमाओं की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता उनका लयात्मक स्वरूप है। लय किसी भी कला कार्य में दृश्यमान आनन्दावस्था का दूसरा नाम है। उमा-महेश्वर की प्रतिमाओं में शारीरिक संरचना के प्रत्येक अंगों को इस प्रकार निरूपित किया गया है कि उनके पूर्ण स्वरूप में लय उत्पन्न हो गया है। लय किसी रूप को बार-बार दोहराने से भी उत्पन्न होता है। उमा-महेश्वर में इस प्रकार का लय बाजुओं को क्रमानुसार उभार व झुकाव देकर इस प्रकार पेश किया है कि दर्शक की नज़र सारी प्रतिमा पर घूम जाती है तथा एक स्थान पर ठहर कर उदासीनता पैदा नहीं करती। इसके अतिरिक्त उमा-महेश्वर की प्रतिमाओ में रेखाओं द्वारा भी लय को दिखाया गया है। केश विन्यास, आभूषणों एवं वस्त्रों में इसका प्रयोग किया गया है। जब किसी भी प्रतिमा के विविध अंगों का आपसी अनुपात ठीक होता है तो उनमें एकरसता आ जाती है। उमा-महेश्वर की प्रतिमाओं में एकरसता का सुन्दर समन्वय दिखता है। इन प्रतिमाओं में कभी-कभी किसी विशेष हिस्से को अधिक महत्व दिया जाता है, जैसे उमा-महेश्वर के शिरोभूषण, मुखाकृति

एवं कमर आदि। इसके साथ ही शरीर के बाकी हिस्सों को आवश्यकतानुसार अनुपात में बनाया जाता है। शरीर की गोलाइयों को अनुपात में रखकर दोहराने से भी मूर्ति में लयमय एकरसता आ जाती है।

उमा-महेश्वर प्रतिमाओं का प्रतिमाशास्त्रीय सौन्दर्य उनके अंगभंगिमा, भावभंगिमा, आभूषण एवं विविध प्रकार के अलंकरणों आदि में दिखता है। अंगभंगिमा का सौन्दर्य उमा-महेश्वर के नेत्र, होंठ, हस्त एवं शारीरिक सौष्ठव आदि में प्रदर्शित होता है। भावभंगिमा के अन्तर्गत उमा-महेश्वर द्वारा विविध प्रकार की मुद्राओं में की गयी अभिव्यक्ति उनके सौन्दर्य को निरूपित करता है, जिनमें अभयमुद्रा, वरदमुद्रा, तर्जनीमुद्रा एवं ललितासनमुद्रा महत्वपूर्ण है। इन प्रतिमाओं में शृंगार रस (प्रेम) को प्रमुखता से दर्शाया गया है। उमा-महेश्वर को विविध प्रकार के आभूषणों से सज्जित किया गया है। दोनों के केशसज्जा का अंकन आकर्षक ढंग से किया गया है।

छायाचित्र-१ उमा-महेश्वर, इलाहाबाद संग्रहालय, उ०प्र०

इलाहाबाद संग्रहालय में अवस्थित उमा-महेश्वर की प्रतिमा में प्रतिमाशास्त्रीय सौन्दर्य का अद्भुत दिग्दर्शन दिखलायी देता है।[१५] प्रस्तुत प्रतिमा में महेश्वर चतुर्भुजी एवं उमा द्विभुजी हैं। महेश्वर के दोनों दाहिने हाथ खण्डित हैं। उनका एक बायां हाथ उमा के वाम उरोज को स्पर्श कर रहा है तथा अन्य बायां हाथ खण्डित है। महेश्वर अलंकृत जटामुकुट, चक्रकुण्डल, एकावली, द्विवली हार, यज्ञोपवीत, वनमाला, कटिसूत्र, उरुद्दाम एवं भुजबन्ध आदि आभूषण धारण किये हुए हैं। महेश्वर सव्य ललितासन में बैठे हैं तथा उनका दाहिना पैर पद्म स्थंडिल पर रखा हुआ है। महेश्वर के बायीं जंघा पर द्विभुजी उमा भी ललितासन मुद्रा में बैठी हैं। द्विभुजी उमा का दाहिना हाथ महेश्वर के स्कन्ध पर तथा बायां हाथ खण्डित है। उमा-महेश्वर दोनों अतीव सम्मोहक मुद्रा में एक दूसरे को देख रहे हैं। उमा की आकर्षक केशराशि को विविध आभूषणों से सज्जित किया गया है। उनके कानों में कुण्डल, गले में हार, स्तन हार, कटिवलय, उरुद्दाम, भुजबन्ध आदि आभूषण हैं। उमा के उत्तरीय को पारदर्शी एवं अलंकृत दिखलाया गया है। महेश्वर के सिर के पीछे नुकीले किरणों से युक्त प्रभामण्डल है। उमा-महेश्वर प्रतिमा के सबसे ऊपरी भाग में विद्याधर युगल, ब्रह्मा एवं लक्ष्मी के साथ चतुर्भुजी विष्णु का अंकन है। परिकर के दोनों तरफ मांगलिक गज एवं व्याल, स्थानक शिवगणों एवं उपासकों का अंकन है। दाहिने परिकर के निचले भाग में गणेश तथा बायीं तरफ कार्तिकेय को ललितासन मुद्रा में दिखाया गया है। उमा-महेश्वर के आसन के नीचे नन्दी (मुख खण्डित) एवं व्याघ्र का अंकन है। सबसे निचले हिस्से के पादपीठ में रावण के दोनों ओर तीन-

तीन उपासक तथा शिवगण दिखलायी दे रहे हैं। रावण को अपने दोनों हाथों से पादपीठ को पर्वत श्रृंखला के रुप में उठाने का प्रयास करते हुए दिखलाया गया है। इस प्रतिमा को शिल्पशास्त्रीय ग्रन्थों के अनुरूप ही निर्मित किया गया है (छायाचित्र -१)। यह उमा-महेश्वर प्रतिमा सम्पूर्ण अलौकिक सौन्दर्य एवं आनन्दानुभूति को अभिव्यक्त करती है।

उमा महेश्वर प्रतिमाओं का शारीरिक एवं आलंकारिक सौन्दर्य : उमा-महेश्वर प्रतिमाएं अपने शारीरिक एवं आलंकारिक सौन्दर्य के लिये विशेष महत्वपूर्ण हैं। इन प्रतिमाओं में शारीरिक सौन्दर्य के अन्तर्गत उनकी अंगभंगिमा का विशेष महत्त्व है। उमा-महेश्वर प्रतिमाओं में भावाभिव्यंजना के माध्यम को मुख (नेत्र, नासिका एवं होंठ), हस्त, शारीरिक सौष्ठव एवं मुद्राओं (हस्त व पाद) के विभिन्न अवयवों के रूप में दर्शाया गया है। इन प्रतिमाओं के निर्माण में शास्त्रीय नियमों का अनुपालन करते हुए उनके संतुलित देहयष्टि पर विशेष ध्यान दिया गया है। शिल्पशास्त्रीय ग्रन्थों में वर्णित उमा-महेश्वर के शारीरिक सौन्दर्य को निखारने में शिल्पी ने अद्भुत निपुणता का परिचय दिया है। महेश्वर के शारीरिक सौन्दर्य में अंग सौष्ठव की बलिष्ठता, मुखाकृति पर धनुषाकार उर्णा, अण्डाकार चेहरा तथा चिबुक में उभार के साथ ही मुखाकृति पर स्मित हास्य भाव दृष्टिगोचर होता है। उमा-महेश्वर के सम्पूर्ण शारीरिक सौन्दर्य का अंकन अलौकिक आनन्दानुभूति की अभिव्यक्ति प्रतीत होती है। उमा के शारीरिक सौन्दर्य में अभिमुख शिर, मुखारविंद, प्रेमालाप से प्रसन्न नयन, उन्नत उरोज, आवर्त नाभि, स्मितयुक्त वदन एवं हास्य उत्सुक होंठ को कलाकृति के रूप में उत्कृष्ट ढंग से प्रदर्शित किया गया है। उमा के शिल्पांकन में स्त्रियोचित मांसल सौन्दर्य के साथ नारी सुलभ कमनीयता का भाव है। महाकवि कालिदास ने कुमारसम्भव में पार्वती के सौन्दर्य का वर्णन करते हुये कहा है कि जब ब्रह्मा ने सारे विश्व के सौन्दर्य उपमानों को एकत्रित कर यथास्थान संजोया तब पार्वती की प्रतिमा निर्मित हुई है।[१६]

सर्वोपमाद्रव्यसमुच्चयेन यथाप्रदेशं विनिवेशितेन।

सा निर्मिता विश्वसृजा प्रयत्नादेकस्थ सौन्दर्यादिदृक्षयेव।। कुमारसम्भव, १-४९

शिल्प कला में उमा-महेश्वर को विविध प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित किया गया है। उमा को रत्नजड़ित हार, नाभि तक लटकता हुआ हार-सूत्र, स्तन-सूत्र, पादवलय, पादजातक एवं रत्नजड़ित केश मुकुट से प्रदर्शित किया गया है। कानों में कुण्डल, हाथों में बाजूबन्ध, कंकण, कटिमेखला एवं पैरो में नुपूर धारण आदि उनका सौन्दर्यवर्धन कर रहे हैं। उमा के हाथों में पद्म, अंजनपात्र अथवा दर्पण का अंकन मिलता है। महेश्वर के आभूषणों में जटामुकुट, सूर्यवृत्त कुण्डल या चक्रकुण्डल, मणिमुक्ताहार, हारसूत्र, यज्ञोपवीत, केयूर, कनकवलय, कटिसूत्र, भूजबन्ध, कंकण, उरुद्दाम एवं नुपूरयुक्त पादजालक आदि आभूषण शोभायमान है।

उमा-महेश्वर प्रतिमा को सौन्दर्य के साथ-साथ देवत्व की विराटता एवं भव्यता प्रदान करने के लिए ऊपरी भाग में देवताओं व मालाधारी गंधर्वों, मांगलिक गजों व व्यालों, स्थानक शिवगणों, उपासकों एवं उनके पुत्रों को दर्शाया गया है। प्रतिमा के पीछे अलंकृत प्रभामण्डल भी सौन्दर्य को बढ़ाता है।

उमा महेश्वर प्रतिमाओं का दार्शनिक सौन्दर्य : धार्मिक एवं दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में कला को महामाया या चिन्मय विलास कहा गया है। जब शिव को लीला करनी होती है तो उनकी शक्ति महामाया (ललिता) समस्त कलाओं का सृजन करती है।[१७]

क्रीड़ा ते लोकरचना सखा ते चिन्मयः शिवः।

आहारस्ते सदानन्दो वासस्ते ह्रदये सताम्।। ललितासहस्त्रनाम, ७/३०/७५

इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है कि 'शिव' और 'शक्ति' परमतत्व के दो रूप हैं। शिव कूटस्थ तत्व हैं और शक्ति परिणामिनी हैं। विविध वैचित्र्यपूर्ण संसार के रूप में अभिव्यक्त शक्ति का आधार एवं अधिष्ठान शिव हैं। शिव अव्यक्त, अदृश्य, सर्वगत एवं अचल आत्मा हैं। शक्ति दृश्य, चल एवं नाम–रूप के द्वारा व्यक्त सत्ता है। जब सौंदर्य का जो रूप शब्दों से निरूपित नहीं हो सकता, वह मूर्ति के माध्यम से व्यक्त किया गया है। मूर्तिकला सौंदर्य की अनुभूति है व भारतीय कला में सौंदर्य को शिव स्वरूप माना गया है जो संसार की प्रत्येक वस्तु में विद्यमान है।

उमा महेश्वर प्रतिमाओं का गृहस्थ सौन्दर्य : उमा–महेश्वर प्रतिमाओं में गृहस्थ जीवन का आदर्श रूप प्रतिबिंबित होता है। इन प्रतिमाओं में उमा और महेश्वर को दम्पत्ति के रूप में अंकित किया गया है। यद्यपि महेश्वर का पारिवारिक जीवन अत्यन्त विस्मय और असमानता, विभिन्नता वाला होकर भी प्रसन्न और आह्लादकारक है। उमा–महेश्वर का प्रणयक्रीड़ा, चौपड़क्रीड़ा, प्रणयमुद्रा एवं अपने पुत्र कार्तिकेय एवं गणेश के साथ कौतुक करना एक आदर्श गृहस्थ जीवन का श्रेष्ठ उदाहरण है। पुराणों के अनुसार महेश्वर एकान्त में उमा को अनेक आध्यात्मिक रहस्यों, कथाओं तथा पुराणों को समझाते एवं सुनाते हैं। सम्पूर्ण सृष्टि एवं क्रियाओं के रहस्य उमा-महेश्वर (शिव पार्वती)के संवाद में मिलता है। ऐसी मान्यता है कि अकेले शिव योग अर्थात् संन्यास के तथा शिव परिवार 'सांसारिक सुखों के प्रतीक' हैं। वाणी और अर्थ का समन्वय, जगत के मातृ–पितृ स्वरूप पार्वती और शिव के प्रति प्रणति रूप मंगलाचरण जीवन के विराट् स्वरूप की अभिव्यक्ति करता है।

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्यये।

जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।। रघुवंश, १/१

उमा–महेश्वर प्रतिमाओं में अधिकांशतः उमा को ललितासन मुद्रा में बैठे हुए महेश्वर के बायें जंघे पर दिखलाया गया है। वास्तव में यह एक ऐसी लालित्य एवं सौन्दर्यपूर्ण अवस्था है, जिसमें स्वतः ही श्रृंगार का भाव उत्पन्न हो जाता है। इन प्रतिमाओं में ध्यान देने योग्य बात यह है कि महेश्वर के गले में अंकित सर्प का अंकन गले से दूर बाहर की ओर दिखलाया गया है। संभवतः गृहस्थ जीवन में विषधर सर्प का कोई औचित्य नहीं है। कुछ प्रतिमाओं में उमा-महेश्वर को पुत्रों एवं गणों के साथ चौसर खेलते हुए दिखलाया गया है, जो दाम्पत्य जीवन के खुशहाल अवस्था को दर्शाता है। इस प्रकार की प्रतिमा मध्य प्रदेश के सागर जिले के ग्राम विनायका से उपलब्ध है। गुर्जर प्रतिहार शैली से संबंधित इस प्रतिमा में उमा–महेश्वर चौसर

खेलते प्रदर्शित हैं। उनके मध्य में चौसर रखा हुआ है। दायीं ओर शिव के समीप वीरभद्र एवं गणेश स्थित हैं। पार्वती के समीप दायीं ओर कार्तिकेय तथा अस्पष्ट आकृति का अंकन है। अधिष्ठान पंक्ति पर पार्वती की सखियों के द्वारा नंदी को खींचकर ले जाया जाना अंकित है। नंदी के पीछे शिव गणों का अंकन है। नंदी के गले में रस्सी बंधी हुई है तथा पार्वती की सखियों के हाथ में रस्सी का छोर है (छायाचित्र - २)।

छायाचित्र-२ उमा-महेश्वर, विनायका, सागर, म०प्र०

निष्कर्ष : उपरोक्त विवरणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं शिल्पशास्त्रीय ग्रन्थों में उमा महेश्वर के अंकन का मूल उद्देश्य विविध प्रकार के सौन्दर्यानुभूति के साथ-साथ देवसान्निध्यानुभूति भी कराना था। वास्तव में उमा-महेश्वर की प्रतिमाओं में सांसारिक एवं आध्यात्मिक सौन्दर्य बोध का अनूठा समन्वय दिखलायी देता है। संभवतः इसी लोकप्रियता के कारण भारतीय कला में उमा-महेश्वर की प्रतिमाएं सर्वाधिक मात्रा में निर्मित हुईं। ये प्रतिमाएं जहाँ एक ओर धर्म एवं दर्शन की अनुभूति कराती हैं, तो दूसरी ओर सांसारिक जीवन के प्रति अनुराग भी पैदा करती हैं। उमा-महेश्वर प्रतिमाओं में महेश्वर को ललितासनमुद्रा में आसीन दिखाने का कारण उनकी सुखप्रद लीलाओं को दिखलाना है। उमा-महेश्वर की प्रतिमाओं के निर्माण में शास्त्रीय नियमों का अनुपालन करते हुए उन्हें केवल पूजनार्थ के निमित्त ही नहीं निर्मित किया गया है, अपितु ये प्रतिमाएं सफल दाम्पत्य जीवन की सौम्यता को भी सफलतापूर्वक निरूपित करती हैं। इन प्रतिमाओं में महेश्वर के अद्भुत परिवार का निदर्शन होता है, जिनमें कल्याण शक्ति (उमा) के साथ देवत्व की असुरत्व पर विजय प्राप्त करने वाली सेना का संचालक (कार्तिकेय) और ऋद्धि-सिद्धि के स्वामी एवं शुभ-लाभ के संयोजक 'गणपति' हैं। ऐसा अद्भुत परिवार भारतीय संस्कृति का एक विशिष्ट पक्ष प्रस्तुत करने में समर्थ है। इस परिवार का प्रत्येक पक्ष वैदिक परम्परा से लेकर परवर्ती कालों में विकसित होता हुआ भारतीयता का रूप प्रस्तुत करता है। उमा-महेश्वर की प्रतिमाएं आलिंगन मुद्रा में एक ही पीठिका या नन्दी पर प्रदर्शित उनके असीम प्रेम को दर्शाती हैं। इनमें अलौकिक देवत्व के साथ लौकिक भावना का भी समावेश किया गया है। ये प्रतिमाएं शाश्वत सौन्दर्य की कमनीय कान्ति उमा और प्रेम के चिरन्तर पुजारी आदि पुरुष महेश्वर के शृंगारिक प्रेम का प्रांजल प्रतीक है। निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि विभिन्न शिल्पग्रन्थों में वर्णित उमा-महेश्वर प्रतिमाओं से हमें विभिन्न प्रकार के सौन्दर्य बोध का दिग्दर्शन होता है। ये प्रतिमाएं जहाँ एक ओर उमा-महेश्वर के शारीरिक एवं कलात्मक सौन्दर्य का बोध कराती हैं, वहीं दूसरी ओर धार्मिक, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक सौन्दर्य की भी अनुभूति कराती हैं।

सन्दर्भ :

१. विष्णुधर्मोत्तरपुराण, प्रियबाला शाह (संपादक), बड़ौदा, १९५८, खण्ड–३ अ.४३/ श्लोक ३८ **कलानां प्रवरं चित्रं धर्मकामार्थमोक्षदम् ।**

२. जर्नल ऑफ दी यू०पी० हिस्टोरिकल सोसाइटी, XXII लखनऊ, पृ० १२८– मथुरा संग्रहालय, संख्या ११.२१०६, ३४.२४९५

३. विष्णुधर्मोत्तरपुराण, प्रियबाला शाह (संपादक), बड़ौदा, १९५८, १०५, ८–१०

४. अपराजितपृच्छा (भुवनदेव कृत), पोपटभाई अंबाशंकर मांकड (संपादक), गायकवाड़ ओरियण्टल, सीरीज, खण्ड ११५, बडौदा, १९४०, २१३; २५–२७

५. देवतामूर्तिप्रकरण, उपेन्द्र मोहन सांख्यतीर्थ (सपांदक), कलकत्ता,

६. श्रीवास्तव, बृजभूषण, प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९९० (द्वितीय संस्करण), पृ० ६६

७. अंशुमद्भेदागम, शुक्ल, द्विजेन्द्रनाथ, वास्तु–शास्त्रम् प्रतिमालक्षणम् से उद्धृत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ० १४९

८. रूपमण्डल, बलराम श्रीवास्तव (संपादक), वाराणसी, १९६८, ४–२७, २८, २९

९. मत्स्य पुराण, आप्टे, एच.एन. (संपादक), पूना, १९०७, २६०/११/२०

१०. श्रीमद्भागवत्, गीताप्रेम, गोराखपुर, ६/१७/४–५

११. लिंग पुराण, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, मुंबई, १९८१, १.९२.७

१२. वराह पुराण, पंचानन तर्करत्न (संपादक), बंगवासी प्रेस, कलकत्ता, ३.४२.२३–२५

१३. शिव पुराण, हनुमान प्रसाद (संपदक), गीताप्रेस, गोरखपुर, १९७८, खण्ड ५, अ.२१.९

१४. वही, कुमारसंभव, ८–८

१५. म्यूजियम ऑफ इण्डिया, नेशनल पोर्टल एण्ड डिजिट रिपॉजिटरी के वेब साइट से।

१६. कालिदासकृत कुमारसम्भव, एम०आर० काले० (संपादक), मोतीलाल बनारसदास, वाराणसी १९६७, १–४९

१७. देवी भागवत पुराण, श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई, वि०स०, १९६२, ७/३०/७५